अध्याय 9: चिड़िया

विषय-सूची 7 प्रश्नावली · 14 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	मेरी समझ से	3 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.3	पंक्तियों पर चर्चा	3 प्रश्न
प्रश्नावली 9.4	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 9.5	भाषा की बात	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.6	साथ-साथ	2 प्रश्न
प्रश्नावली 9.7	शब्द एक अर्थ अनेक	1 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

कविता के आधार पर बताइए कि इनमें से कौन-सा गुण पक्षियों के जीवन में नहीं पाया जाता है? • प्रेम-प्रीति • मिल-जुलकर रहना • लोभ और पाप • निर्भय विचरण

हल

कविता में कवि ने बताया है कि पक्षियों में प्रेम-प्रीति होती है — 'चिड़िया बैठी प्रेम-प्रीति की रीति हमें सिखलाती है!'
पक्षी मिल-जुलकर रहते हैं — 'सब मिल-जुलकर रहते हैं वे, सब मिल-जुलकर खाते हैं'
पक्षी निर्भय विचरण करते हैं — 'सीमा-हीन गगन में उड़ते, निर्भय विचरण करते हैं'
किंतु कविता में स्पष्ट कहा गया है — 'उनके मन में लोभ नहीं है, पाप नहीं, परवाह नहीं'
अतः 'लोभ और पाप' वह गुण है जो पक्षियों के जीवन में नहीं पाया जाता।

उत्तर: लोभ और पाप — पक्षियों के जीवन में यह गुण नहीं पाया जाता।

प्रश्न 2

'सब मिल-जुलकर रहते हैं वे, सब मिल-जुलकर खाते हैं' कविता की यह पंक्ति किन भावों की ओर संकेत करती है? • असमानता और विभाजन • प्रतिस्पर्धा और संघर्ष • समानता और एकता • स्वार्थ और ईर्ष्या

हल

ये पंक्तियाँ बताती हैं कि वन में सभी पक्षी — खंजन, कपोत, चातक, कोकिल, काक, हंस, शुक आदि — आपस में हिल-मिल कर रहते हैं।
कोई भेदभाव नहीं, कोई संघर्ष नहीं — सब मिलकर खाते-रहते हैं।
यह भावना 'समानता और एकता' की है।

उत्तर: समानता और एकता — ये पंक्तियाँ पक्षियों के सामूहिक और समभावपूर्ण जीवन का चित्रण करती हैं।

प्रश्न 3

'वे कहते हैं, मानव! सीखो, तुम हमसे जीना जग में' कविता में पक्षी मनुष्य से कैसा जीवन जीने के लिए कहते हैं? • आकाश में उड़ते रहना • बंधन में रहना • स्वच्छंद रहना • संचय करना

हल

कविता में पक्षी मनुष्य से पूछते हैं — 'हम स्वच्छंद और क्यों तुमने डाली है बेड़ी पग में?'
पक्षी 'सीमा-हीन गगन में' उड़ते हैं, किसी बंधन में नहीं रहते।
वे मनुष्य को 'सोने की कड़ियाँ तोड़ो' और 'द्रोह-भावना को छोड़ो' कहकर स्वतंत्र जीवन जीने की सीख देते हैं।
अतः पक्षी मनुष्य को 'स्वच्छंद रहना' सिखाते हैं।

उत्तर: स्वच्छंद रहना — पक्षी मनुष्य को लोभ-बंधन छोड़कर स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

प्रश्नावली 9.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

कविता में से चुनकर कुछ संदर्भ नीचे दिए गए हैं। इन्हें इनके सही भावों से मिलाइए। संदर्भ — भाव 1. चिड़िया की बोली — 1. बंधन और लालच 2. सोने की कड़ियाँ — 2. श्रम और संतोष 3. निर्भय विचरण — 3. बंधन से मुक्ति 4. मुक्ति-मंत्र — 4. स्वतंत्रता और निर्बाध जीवन 5. दिनभर काम — 5. प्रेम और स्वतंत्रता का संदेश

हल

1. चिड़िया की बोली → 5. प्रेम और स्वतंत्रता का संदेश — चिड़िया अपनी बोली में मनुष्य को प्रेम-प्रीति की रीति सिखाती है और स्वतंत्रता का संदेश देती है।
2. सोने की कड़ियाँ → 1. बंधन और लालच — 'सोने की कड़ियाँ' मनुष्य के लोभ और सांसारिक बंधनों का प्रतीक हैं।
3. निर्भय विचरण → 4. स्वतंत्रता और निर्बाध जीवन — पक्षी सीमा-हीन गगन में निर्भय होकर विचरण करते हैं, यह स्वतंत्र और निर्बाध जीवन का प्रतीक है।
4. मुक्ति-मंत्र → 3. बंधन से मुक्ति — चिड़िया जग के बंदी मानव को मुक्ति-मंत्र बतलाती है।
5. दिनभर काम → 2. श्रम और संतोष — 'दिन भर करते काम, रात में पेड़ों पर सो जाते हैं' — यह परिश्रम और संतोष की भावना दर्शाता है।

उत्तर: 1→5, 2→1, 3→4, 4→3, 5→2

प्रश्नावली 9.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ समझाइए और अपने विचार लिखिए: (क) "चिड़िया बैठी प्रेम-प्रीति की रीति हमें सिखलाती है!"

हल

इन पंक्तियों में कवि ने चिड़िया को प्रेम और सौहार्द का प्रतीक बताया है।
चिड़िया पीपल की डाली पर बैठकर गाती है और अपनी बोली के माध्यम से मनुष्य को प्रेम-प्रीति का पाठ पढ़ाती है।
वन के सभी पक्षी आपस में प्रेम से रहते हैं — कोई भेदभाव नहीं, कोई शत्रुता नहीं।
कवि का संदेश है कि मनुष्य को भी पक्षियों की तरह परस्पर प्रेम और सद्भाव से रहना चाहिए।

उत्तर: चिड़िया अपने आचरण और गान से मनुष्य को प्रेम-सौहार्द से जीने की शिक्षा देती है।

प्रश्न 2

निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ समझाइए और अपने विचार लिखिए: (ख) "उनके मन में लोभ नहीं है, पाप नहीं, परवाह नहीं"

हल

इन पंक्तियों में पक्षियों की निर्लोभ और निश्चिंत प्रवृत्ति का चित्रण है।
पक्षी जरूरत से अधिक संचय नहीं करते — 'जो मिलता है अपने श्रम से, उतना भर ले लेते हैं; बच जाता जो, औरों के हित, उसे छोड़ वे देते हैं!'
वे जग का सारा माल हड़पकर जाने की चाह नहीं रखते।
मनुष्य इसके विपरीत लोभ में जीता है और पाप करता है।
कवि यह संदेश देते हैं कि लोभ-मुक्त जीवन ही सच्चा जीवन है।

उत्तर: पक्षियों में लोभ, पाप और चिंता का अभाव है — वे श्रम से जो मिले उसी में संतुष्ट रहते हैं और बचा हुआ दूसरों को दे देते हैं।

प्रश्न 3

निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ समझाइए और अपने विचार लिखिए: (ग) "सीमा-हीन गगन में उड़ते, निर्भय विचरण करते हैं"

हल

इन पंक्तियों में पक्षियों की असीम स्वतंत्रता का चित्रण है।
पक्षियों के लिए आसमान ही उनका घर है — 'आसमान ही उनका घर है; जहाँ चाहते, जाते हैं!'
वे किसी भय, किसी सीमा और किसी बंधन के बिना जहाँ चाहें उड़ते हैं।
कवि इसके माध्यम से मनुष्य को संदेश देते हैं कि मानव ने स्वयं ही अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल रखी हैं — लोभ, ईर्ष्या

और द्वेष की बेड़ियाँ।

यदि मनुष्य इन बंधनों को छोड़ दे तो वह भी स्वच्छंद जीवन जी सकता है।

उत्तर: पक्षी असीम आकाश में निर्भय होकर विचरण करते हैं — यह उनकी पूर्ण स्वतंत्रता और निर्भयता का प्रतीक है।

प्रश्नावली 9.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

(क) "सब मिल-जुलकर रहते हैं वे, सब मिल-जुलकर खाते हैं" पक्षियों के आपसी सहयोग की यह भावना हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है? स्पष्ट कीजिए।

हल

कविता में बताया गया है कि वन के सभी पक्षी — खंजन, कपोत, चातक, कोकिल, काक, हंस, शुक आदि — आपस में हिल-मिलकर रहते हैं।
पक्षियों की यह आपसी सहयोग की भावना हमें यह सिखाती है कि समाज में सभी लोगों को मिल-जुलकर रहना चाहिए।
जब सब मिलकर काम करते हैं तो हर कार्य सरल हो जाता है और एकता में शक्ति होती है।
आपसी सहयोग से भेदभाव, ईर्ष्या और द्वेष दूर होते हैं और समाज में सुख-शांति बनी रहती है।
परिवार, विद्यालय और समाज — सभी जगह मिल-जुलकर रहने से जीवन सुंदर और सफल बनता है।

उत्तर: पक्षियों की आपसी सहयोग की भावना हमें एकता, सद्भाव और मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा देती है जो परिवार और समाज दोनों के लिए उपयोगी है।

प्रश्न 2

(ख) "जो मिलता है, अपने श्रम से उतना भर ले लेते हैं" पक्षी अपनी आवश्यकता भर ही संचय करते हैं। मनुष्य का स्वभाव इससे भिन्न कैसे है?

हल

पक्षी केवल उतना ही लेते हैं जितनी उन्हें जरूरत होती है — 'जो मिलता है अपने श्रम से, उतना भर ले लेते हैं; बच जाता जो, औरों के हित, उसे छोड़ वे देते हैं।'
मनुष्य का स्वभाव इससे बिल्कुल भिन्न है। मनुष्य में लालच की प्रवृत्ति होती है।
मनुष्य जरूरत से अधिक धन और संपत्ति जमा करना चाहता है।
कविता में कहा गया है — 'जग का सारा माल हड़पकर जाने की भी चाह नहीं' — यह पक्षी की विशेषता है, मनुष्य की नहीं।
मनुष्य अपनी लालसा के कारण दूसरों का हक भी छीन लेता है और बेड़ियों में जकड़ा रहता है।

उत्तर: पक्षी केवल आवश्यकतानुसार लेकर शेष छोड़ देते हैं, जबकि मनुष्य लोभवश जरूरत से अधिक संचय करता है और दूसरों का हक भी लेना चाहता है।

प्रश्न 3

(ग) "हम स्वच्छंद और क्यों तुमने, डाली है बेड़ी पग में?" पक्षी को स्वच्छंद और मनुष्य को बेड़ियों में क्यों बताया गया है?

हल

पक्षी किसी नियम, लोभ या बंधन से बंधे नहीं हैं — वे सीमा-हीन गगन में उड़ते हैं, निर्भय विचरण करते हैं।
उनके मन में लोभ नहीं, पाप नहीं, परवाह नहीं — इसलिए वे स्वच्छंद हैं।
मनुष्य ने अपने ही लोभ, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष के कारण स्वयं को बेड़ियों में जकड़ लिया है।
'सोने की कड़ियाँ' सांसारिक लोभ और बंधन का प्रतीक हैं जिन्हें मनुष्य स्वयं पहनता है।
कवि का आशय है कि मनुष्य यदि अपने स्वार्थ, लोभ और द्रोह-भावना को छोड़ दे तो वह भी पक्षियों की तरह स्वच्छंद हो सकता है।

उत्तर: पक्षी लोभ-पाप से मुक्त होने के कारण स्वच्छंद हैं, जबकि मनुष्य ने स्वयं अपने लोभ, अहंकार और द्वेष की 'सोने की कड़ियाँ' पहन रखी हैं जो उसे बंधन में रखती हैं।

प्रश्नावली 9.5 — भाषा की बात

प्रश्न 1

"पीपल की ऊँची डाली पर / बैठी चिड़िया गाती है! / तुम्हें ज्ञात क्या अपनी / बोली में संदेश सुनाती है?" रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'गाती' और 'सुनाती' रेखांकित शब्दों से चिड़िया के गाने और सुनाने के कार्य का बोध होता है। वे शब्द जिनसे कार्य करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। कविता में ऐसे क्रिया शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए और उनसे नए वाक्य बनाइए।

हल

कविता में क्रिया शब्द और उनसे बने नए वाक्य:

1. गाती है — राधा सुबह-सुबह मधुर गीत गाती है।
2. सुनाती है — दादी हमें रोज रात को कहानी सुनाती है।
3. सिखलाती है — शिक्षिका हमें हिंदी की कविता सिखलाती है।
4. बतलाती है — मौसम-विभाग कल का मौसम बतलाती है।
5. रहते हैं — हम सब मिल-जुलकर एक मकान में रहते हैं।
6. खाते हैं — सभी परिवारजन साथ बैठकर खाना खाते हैं।
7. जाते हैं — पक्षी सुबह होते ही अपने काम पर जाते हैं।
8. बसाते हैं — लोग शहरों में अपनी दुनिया बसाते हैं।
9. सो जाते हैं — बच्चे थककर जल्दी सो जाते हैं।
10. उड़ते हैं — आकाश में पक्षी ऊँचे उड़ते हैं।
11. करते हैं — हम प्रतिदिन व्यायाम करते हैं।
12. देते हैं — बड़े-बुजुर्ग हमें आशीर्वाद देते हैं।
13. भरते हैं — किसान खलिहान अनाज से भरते हैं।
14. सीखो — बड़ों से हमें अच्छी बातें सीखो।
15. तोड़ो — बुरी आदतों की जंजीर तोड़ो।
16. छोड़ो — झूठ बोलने की आदत छोड़ो।

उत्तर: कविता में क्रिया शब्द: गाती है, सुनाती है, सिखलाती है, बतलाती है, रहते हैं, खाते हैं, जाते हैं, बसाते हैं, सो जाते हैं, उड़ते हैं, करते हैं, देते हैं, भरते हैं, सीखो, तोड़ो, छोड़ो — ये सभी शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराते हैं।

प्रश्नावली 9.6 — साथ-साथ

प्रश्न 1

"वन में जितने पंछी हैं, खंजन, / कपोत, चातक, कोकिल; / काक, हंस, शुक आदि वास / करते सब आपस में हिलमिल!" वन में सारे पक्षी एक साथ रह रहे हैं, हमारे परिवेश में भी पशु-पक्षी साथ रहते हैं। आप विचार कीजिए कि हमारे परिवेश में उनका रहना क्यों आवश्यक है?

हल

हमारे परिवेश में पशु-पक्षियों का रहना अनेक कारणों से आवश्यक है:

1. पारिस्थितिक संतुलन — पशु-पक्षी खाद्य-श्रृंखला का हिस्सा हैं। कीट-पतंगे खाकर पक्षी फसलों की रक्षा करते हैं।
2. परागण — पक्षी और कीट फूलों का परागण करते हैं जिससे फल और बीज बनते हैं। इससे वनस्पतियाँ फलती-फूलती हैं।
3. बीज प्रसार — पक्षी फल खाकर बीज दूर-दूर तक फैलाते हैं जिससे वन और वनस्पति का विस्तार होता है।
4. पर्यावरण शुद्धि — गिद्ध और कौए जैसे पक्षी मृत जीवों को खाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं।
5. प्राकृतिक सौंदर्य — पक्षियों की चहचहाहट और रंग-बिरंगे पंख हमारे परिवेश को सुंदर और आनंदमय बनाते हैं।
6. मानसिक सुख — पक्षियों की आवाज सुनकर मन को शांति और प्रसन्नता मिलती है।

उत्तर: हमारे परिवेश में पशु-पक्षियों का रहना पारिस्थितिक संतुलन, परागण, बीज प्रसार, पर्यावरण शुद्धि और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रश्न 2

हम अपने आस-पास रहने वाले पशु-पक्षियों की सहायता कैसे कर सकते हैं?

हल

हम निम्नलिखित तरीकों से आस-पास के पशु-पक्षियों की सहायता कर सकते हैं:

1. दाना-पानी — घर की छत या बालकनी पर पक्षियों के लिए दाना और पानी का कटोरा रखें, विशेषकर गर्मियों में।
2. घोंसले की सुरक्षा — पक्षियों के घोंसलों को न उजाड़ें और बच्चों को भी ऐसा करने से रोकें।
3. पेड़-पौधे लगाएँ — घर के आस-पास पेड़-पौधे लगाएँ ताकि पक्षियों को आश्रय और फल मिल सकें।
4. कीटनाशकों का कम उपयोग — खेतों और बगीचों में रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग कम करें।
5. बिल्ली से बचाव — पालतू बिल्लियों पर नजर रखें ताकि वे पक्षियों को नुकसान न पहुँचाएँ।
6. घायल पक्षी की मदद — यदि कोई पक्षी घायल हो तो उसे सुरक्षित स्थान पर रखें और पशु चिकित्सक को दिखाएँ।
7. पर्यावरण रक्षा — जंगलों की कटाई न होने दें और पर्यावरण प्रदूषण कम करें।

उत्तर: पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी रखना, घोंसलों की रक्षा करना, पेड़-पौधे लगाना, कीटनाशकों का कम उपयोग करना और घायल पक्षियों की मदद करना — इस प्रकार हम उनकी सहायता कर सकते हैं।

प्रश्नावली 9.7 — शब्द एक अर्थ अनेक

प्रश्न 1

'उनके मन में लोभ नहीं है' इस पंक्ति में 'मन' का अर्थ 'चित्त' (बुद्धि) है। नीचे कुछ और शब्द दिए गए हैं। इन्हें अलग-अलग अर्थों या संदर्भों में प्रयोग कीजिए: (क) कर (ख) जल (ग) अर्थ (घ) फल (ङ) आम

हल

(क) कर — तीन अर्थ:
i. हाथ (शरीर का अंग) — उसने अपने कर से माँ को नमस्ते किया।
ii. टैक्स/कर (शुल्क) — व्यापारी को सरकार को कर चुकाना होता है।
iii. करना (क्रिया) — यह काम तुम स्वयं कर लो।
(ख) जल — दो अर्थ:
i. पानी — जल ही जीवन है।
ii. जलना (क्रिया) — लकड़ी आग में जल रही है।
(ग) अर्थ — दो अर्थ:
i. मतलब/भाव — इस कविता का अर्थ बताइए।
ii. धन/पैसा — अर्थ के बिना जीवन कठिन है।
(घ) फल — दो अर्थ:
i. खाने का फल — आम मेरा पसंदीदा फल है।
ii. परिणाम — मेहनत का फल मीठा होता है।
(ङ) आम — दो अर्थ:
i. एक फल — गर्मियों में आम बहुत मिलता है।
ii. सामान्य/साधारण — यह कोई आम बात नहीं है।

उत्तर: कर (हाथ/कर/करना), जल (पानी/जलना), अर्थ (मतलब/धन), फल (खाने का फल/परिणाम), आम (फल/सामान्य) — एक ही शब्द के अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ होते हैं।